IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 30, Issue 2, Series 1 (February, 2025) 77-85
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

महात्मा गाँधी के खादी ग्रामोद्योग दर्शन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

नीरू जारवाल
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, भारतीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़बास, जिला खैरथल–तिजारा, राजस्थान

शोध पत्र सारांश

खादी शब्द की उत्पत्ति "खद्दर" से हुई है, जो भारत में हाथ से काते गए कपड़े के लिए प्रयुक्त शब्द है। सिंधु घाटी सभ्यता में हाथ से काते गए कपास के साक्ष्य मिलते हैं, जिससे खादी प्राचीन हो गई। समय बीतने के साथ–साथ इसे मलमल, चिंट्ज़ और कैलिको जैसे नाम दिए गए। औरंगजेब के शासनकाल में भी इसका इस्तेमाल होता था। खादी एक हाथ से कटा और बुना हुआ कपड़ा है। कच्चे माल के रूप में कपास, रेशम या ऊन का उपयोग करके, उन्हें खादी धागा बनाने के लिए एक चरखे (एक पारंपरिक कताई मशीन) पर काटा जाता है। 'खादी 'लंबे समय से देश की स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति से जुड़ी रही है, यह शब्द महात्मा गांधी और उनके स्वदेशी आंदोलन की छवि के लिए अग्रणी था। खादी एक कपड़े के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द है जिसमें आमतौर पर कपास के रेशों को हाथ से काटा जाता है। हालांकि, एक लोकप्रिय धारणा के विपरीत, खादी रेशम और ऊन से भी बनाई जा सकती है, जिन्हें क्रमशः ऊनी खादी के रूप में जाना जाता है। इस कपड़े की बनावट गर्मियों में आरामदायक और सर्दियों के दौरान गर्म रहने की क्षमता के लिए जानी जाती है। 'खादी 'लंबे समय से देश की स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति से जुड़ी रही है, यह शब्द महात्मा गांधी और उनके स्वदेशी आंदोलन की छवि के लिए अग्रणी था। खादी एक कपड़े के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द है जिसमें आमतौर पर कपास के रेशों को हाथ से काटा जाता है। खादी को भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा पुनर्जीवित किया गया था, जिन्होंने इसकी क्षमता को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनने और गाँवों में वापस लाने के लिए एक उपकरण के रूप में देखा था। 1920 में महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन में खादी को एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया था। महात्मा गांधी ने 1920 के दशक में भारत में ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी की कताई को बढ़ावा देना शुरू किया, इस प्रकार खादी स्वदेशी आंदोलन का एक अभिन्न अंग और प्रतीक बन गया। । खादी भारतीयों की आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। यह ब्रिटिश मिल में बने कपड़े के इस्तेमाल के प्रति प्रतिरोध का भी प्रतीक है अतः प्रस्तुत शोध पत्र में, महात्मा गाँधी के खादी ग्रामोद्योग दर्शन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द :– ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में खादी, खादी अर्थ एवं परिभाषा, खादी की दार्शनिक पृष्टभूमि, खादी और ग्रामोद्योग आयोग में महात्मा गांधी का योगदान, खादी का नया दृष्टिकोण, खादी अस्तित्व के कारण, खादी ग्रामोद्योग आयोग एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

यह महात्मा गांधी के संपूर्ण जीवन की शोध थी। वे एक बेहद ईमानदार, खरे और व्यावहारिक व्यक्ति थे जो अपने विचारों को जीवन में उतारकर सत्य की कसौटी पर परख कर दूसरों को संदेश देते थे। उनकी परख इतनी मौलिक और मजबूत थी जिसके बल पर उन्होंने एक बड़े एवं शक्तिशाली साम्राज्य से एक कमजोर देश को आजाद कराया। इतना आत्मबल भर दिया उस देश में कि फिर कोई साम्राज्यवादी ताकत टिक नहीं सकती थी, अहिंसा के बल पर एक देश को आजाद कर लेना एक बड़ी और आश्चर्यजनक सफलता थी। परन्तु गांधी जी इसे केवल राजनैतिक स्वतंत्रता मानते थे। वास्तविक स्वतंत्रता के मायने उनके लिए कुछ और ही थे। वे वास्तविक लोकतंत्र को ग्रामस्वराज्य में देखते थे। उनके लिए असली स्वतंत्रता गाँवो से शुरू होती है जो अभी भी परतंत्र थे उनकी नजर में, क्योंकि वहाँ स्वावलंबन नहीं था। संसाधनों का विकेन्द्रीकरण नहीं था।

गांधी जी प्रारंभ से ही ग्रामस्वराज्य के प्रति सचेत थे और उनके मन में संपूर्ण मानवजाति के सर्वांगीण विकास का महत्त्वपूर्ण प्रश्न था। सर्वांगीण विकास अर्थात् मानव के भौतिक विकास के साथ उसका आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास। मन, वचन एवं कर्म की शुद्धता उनके इस विकास का आधार थी। इसी कारण वे स्वतंत्रता आंदोलन के व्यापक अभियान के दौरान भी अपनी दृष्टि गरीब एवं अभावों में जीने वाली जनता से नहीं उठा पाते थे। वे जहाँ कहीं भी अभाव में जीती जिंदगी देखते थे उसके उद्धार का एक उपाय उनके हृदय में अंकित हो जाता था और वे उपाय एक रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में सामने आते थे। ऐसा रचनात्मक कार्यक्रम जिसका निचोड़ था, देश के सभी लोगों की आर्थिक स्वतंत्रता और समानता का प्रारंभ। स्वावलंबन और समानता को वे वास्तविक लोकतंत्र की नींव समझते थे।

गांधी जीवन की दो सबसे महत्त्वपूर्ण बातें है– सर्वोदय और सत्याग्रह। सर्वोदय गांधी दर्शन का सामाजिक आदर्श तथा सत्याग्रह इस आदर्श को प्राप्त करने का तरीका है। ये दोनों बातें प्रधानतः भारतीय समाज की किसानी परंपराओं से संबंधित है। भारतीय जनता में उनके व्यक्तित्व की लोकप्रियता का यह रहस्य है।

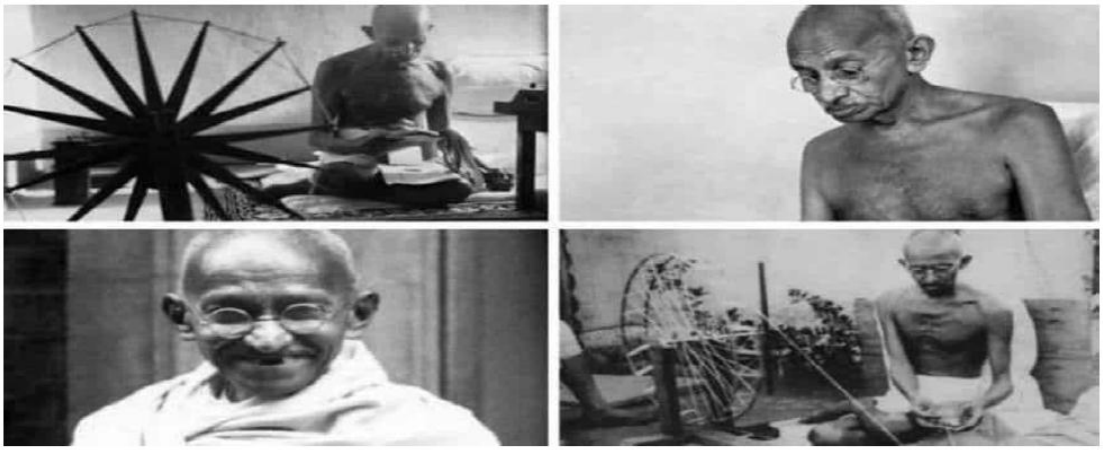

आर्थिक स्वतंत्रता एवं उसके आधार पर संपूर्ण स्वतंत्रता के लिए अपने 'सर्वोदय' का जो आदर्श उन्होंने रखा था, वह उस समय की अपेक्षा आज और भी प्रासंगिक एवं उपादेय जान पड़ता है क्योंकि अपनी राजनैतिक आजादी के बाद भी भारत आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक रूप से परतंत्र ही है। आज प्रौद्योगिकी में भारत ने काफी विकास कर लिया है, किन्तु गाँव जो अभी भी बहुत पिछड़े हुए हैं, बेरोजगारी जो अभी व्यापक स्तर पर विद्यमान है, प्रकृति जो हमारे व्यवहार से नाराज होकर भयावह प्रतिषाद देने को तैयार खड़ी है, पुरातन सभ्यता एवं संस्कृति जीवन में दिखाई नहीं देती, सादगी जो कहीं चली गई है, क्या यह विकास है? क्या हम सब खुश है? नहीं, नहीं तो फिर विकास कैसे हुआ?

ऐसे में जरूरत है उस युगपुरूष के दर्शन की जो, उन्होंने बहुत पहले अपनी दूर दृष्टि के तहत रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में दिया था एवं जिसकी व्यावहारिक परिणति के रूप में दिया था 'खादी एवं ग्रामोद्योग दर्शन ।

इस दर्शन के मूल में उनका शारीरिक एवं स्वावलंबन का व्यापक विचार है एवं उस कताई और बुनाई की तरफ लौटने का आग्रह है जो आदिम मानव की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति के रूप में ही जन्म ले चुकी थी और वैदिक परंपरा का हिस्सा भी थी। मध्यकाल में भी जो बेहतरीन मुलायम वस्त्र निर्माण की कला थी। अर्थात् वह कताई और बुनाई जो प्रारंभिक काल से लेकर सभ्यता के विकास के साथ जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी उसे अब विस्मृत कैसे किया जा सकता है जब करोड़ों हाथ खाली (श्रम के अभाव में) है विशेषकर भारत के संदर्भ में, जहाँ अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती हैं और अभाव उनकी जिंदगी का हिस्सा है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है इसलिए उसकी अर्थव्यवस्था का आधार भी कृषि ही हो सकता है और विकास का आधार कृषकों की उन्नति ही हो सकता है। इसलिये कृषकों के खाली समय के उपयोग के रूप में उन्होंने जो खादी एवं ग्रामोद्योग का विचार दिया उसकी शुरूआत उन्होंने स्वदेशी आंदोलन में ही कर दी थी। स्वदेशी व्रत के व्यावहारिक पालन के रूप में शुरू हुआ उनका यह अभियान एक नैतिक एवं आध्यात्मिक दर्शन बन गया और खादी वस्त्र न होकर विचार बन गया।

विचार इसलिए क्योंकि गांधी ने इसमें एक गहरे त्याग की भावना भरी थी। एक मानवतावादी दृष्टि जिसकी शाश्वतता शारीरिक श्रम एवं आत्मबल, में ही थी। पशुता, क्रूरता, कायरता एवं शोषण, सभी का उसमें निषेध था। आत्मबल जो सत्य एवं अहिंसा से पोषित, ईश्वर से साक्षात्कार का एकमात्र मार्ग था। खादी एवं ग्रामोद्योग के माध्यम से गांधी बेरोजगारी एवं बेकारी तो दूर करना चाहते थे लेकिन एक नैतिक एवं अहिंसक व्यवसाय से, जिसमें किसी का शोषण नहीं होता, किसी के हितों पर कुठाराघात नहीं होता। जो एक नैतिक पोषण विधि है जिसमें दूसरों का सहयोग शामिल है और व्यवसाय एवं शारीरिक पोषण से भी परे एक मानसिक विकास। सूत के हर धागे में उन्हें शांति के दर्शन होते थे क्योंकि उसमें गरीब का पेट भरने की संभावना वे देखते थे। चरखा प्राणी मात्र के प्रति दया का प्रतीक था। हस्तशिल्प, पुरानी कला के लिए संजीवनी थे।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गांधी जी ने प्रत्येक व्यक्ति को एकादश व्रतों की एक आचार संहिता दी। उन्होंने कहा सत्य और अहिंसा के द्वारा मनुष्य में ईमानदारी, व्यापक प्रेम, सेवा, परोपकार एवं मैत्री के गुण आ सकते हैं। अपरिग्रह और अस्तेय से मनुष्य में त्याग की भावना आकर उसकी आवश्यकताएँ सीमित हो सकती है। ब्रह्मचर्य के पालन से वह अपनी पाश्विक प्रवृतियों पर नियंत्रण रख सकता है। अभय से पर्याप्त आत्मबल एवं साहस उत्पन्न होता है। इसी प्रकार सर्वधर्म एवं स्वदेशी के पालन से सहिष्णुता आती है जो आत्मपरिष्कार के लिए आवश्यक है। शारीरिक श्रम द्वारा न केवल स्वस्थ रह सकता है बल्कि उत्पादक कार्यों में भाग लेकर समाज की पर्याप्त सेवा कर सकता है। अस्पृश्यता निवारण मनुष्यों को समानता का संदेश देता है। इस प्रकार मानव का सर्वांगीण विकास संभव बनता है।

परन्तु यह नैतिक एवं व्यावहारिक दर्शन अपने यथार्थ रूप में पल्लवित नहीं हो सका, वर्तमान पूँजीवादी युग में मशीनीकरण एवं औद्योगीकरण युक्त हिंसक अविवेकपूर्ण प्रौद्योगिकी के कारण। इस युग के स्वार्थ के आगे प्राकृतिक संसाधन कम पड़ रहे हैं और आम जनता के लिए मूल आवश्यक संसाधन कम पड़ रहे है। ऐसा वैषम्य वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न हुआ है जिसमें इच्छाओं को बढ़ाने की भावना निहित है। इन इच्छाओं ने पारिस्थितिकि को इतना असंतुलित कर दिया है कि जल संसाधन निरंतर घट रहे हैं और मानव सभ्यता विनाशकारी शंकाओं से घिरी है।

व्यापक स्वार्थ एंव प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप दुनियाँ आज युद्ध, आंतकवाद, अशांति एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट का सामना कर रही है इसलिए विश्व शांति के संदर्भ में गांधी जी का युद्ध विरोधी चिंतन महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हो जाता है। गांधी जी ने विश्वशांति के लिए एक अहिंसात्मक, रचनात्मक मार्ग प्रस्तुत किया था। गांधी जी के मार्ग के विषय में एक रूसी विचारक उल्यानोत्स्की भी स्वीकार करते हैं कि "गांधी ने जिस अहिंसात्मक पथ का प्रचार किया। वह सहज भारतीय परंपरा का ठेठ भारतीय पथ था।" पंडित नेहरू ने भी कहा है– "गांधीजी ने जिन शब्दों का प्रयोग किया वे जनता में अच्छी तरह परिचित और उसके द्वारा समझे जाने वाले थे। उनमें जनता के ह्रदय तक पहुँचने की अद्भुत शक्ति थी।"

विश्व के विभिन्न देश जहाँ गांधी के अहिंसात्मक विचार एवं आचार दर्शन को अपनाने का विचार कर रहे हैं वहीं राष्ट्रीय स्तर पर भी इसे एक क्रांतिकारी सोच के रूप में परिवर्तित करने के प्रयास में दाण्डी मार्च की 75वीं वर्षगांठ 6 अप्रेल 2005 को आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने कहा– "महात्मा गांधी अतीत नहीं, भविष्य भी है।" इस क्रांतिकारी सोच के द्वारा देश में व्यापक जन जाग्रति लाने का प्रयास किया जा रहा है गांधी के उस संदेश के प्रति, जो उनके खादी एवं ग्रामोद्योग दर्शन के मूल में था।

इस प्रकार बहुसंख्यक लोगों के स्वावलंबन की आवश्यकता एवं अन्तरराष्ट्रीय बाजार में पसंद किये जाने के कारण सरकार ग्रामोद्योग (हस्तशिल्प) के साथ खादी का भी निर्यात बढ़ाने का प्रयास कर रही है। फैशन के साथ–साथ यह नैतिक व्यापार की अवधारणा को भी पुष्ट करती है इस कारण आधुनिक जागरुक उपभोक्ता संस्कृति में अपनी खास पहचान बना रही है। यह एक सभ्य, शीतल एवं स्वास्थ्यवर्धक 'फैशन' प्रदान करती है जो आधुनिकता एवं परंपरा का सुंदर मेल है। इन्हीं सबके मद्देनजर खादी की उत्पादन प्रक्रिया एवं उपकरणों का सरल तकनीकी विकास भी किया जा रहा हैं जिससे अमिकों का कुछ बोझ कम किया जा सके एवं उत्पादन भी कुछ तीव्र हो। उच्च तकनीकी विकास के साथ–साथ प्रबन्धन को नैतिक बनाने एवं व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में वर्तमान प्रबन्धन कक्षाओं में भी युवाओ को 'गांधी' पढ़ाये जाते हैं। असफलता की जिम्मेदारी स्वयं लेने एवं सफलता का श्रेय अन्यों को देने का गांधीवादी व्यक्तित्व का नेतृत्व गुण वर्तमान प्रबन्धकों को सिखाया जाता है। अतः हम देखते हैं कि गांधी के नैतिक जीवन एवं व्यावहारिक दर्शन के रूप में खादी एवं ग्रामोद्योग दर्शन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक स्तर पर उपादेयता सिद्ध हो रही है और इस दिशा में कुछ प्रयास भी हो रहे हैं लेकिन उस आदर्श एवं उच्च स्तरीय रूप में इसे प्रतिष्ठित करने के लिए हमें लम्बा रास्ता तय करना होगा। वे संस्कार एवं कार्यशैली अपनानी होगी जो बापू को अपेक्षित थी। देश एवं दुनियाँ को एक महान् नैतिक एवं व्यावहारिक लक्ष्य देकर एवं उस पर अग्रसर होने का मार्ग दिखाकर 30 जनवरी 1948 को बापू हमें अलविदा कह गये और उस समय भी उनके कल्याणमय शब्द थे हे राम इस कल्याणकारी शब्द में भी उनका दर्शन समाहित था। उस दर्शन के अनुसरण में हम एक कदम बढ़ाएँगे, ऐसी मेरी शोध पत्र में अपेक्षा है, एक लघु प्रयास है। यदि हम बापू को महसूस कर सकें, उनके बताए मार्ग पर चलने का सूक्ष्म ही सही किंतु प्रयास कर सकें तो हमारा वर्तमान और भविष्य संभवतः अधिक टिकाऊ होगा।

उद्देश्य :–

1 महात्मा गांधी के खादी में योगदान की ऐतिहासिक पृष्टभूमि का अध्ययन करना।

2. देश में खादी की दार्शनिक पृष्टभूमि का अध्ययन करना ।

3. महात्मा गांधी के द्वारा खादी के अस्तित्व के कारण व महत्व को स्पष्ट करना है।

परिकल्पना : –

1. महात्मा गांधी का खादी उपयोग स्वदेशी आंदोलन में महत्वपूर्ण रहा है।

2. महात्मा गांधी के खादी उपयोग का देश पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह : –

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृ ष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों को शामिल किया गया है। द्वितीयक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

हाथ–कताई और हाथ बुनाई मानव की प्रारंभिक रचनात्मक क्रियाओं में से थी। बहुत से शोधार्थी यह विश्वास करते हैं कि मनुष्य ने बुनने की कला घास और पत्तियों से सीखी थी और उसके बाद पेड़ पौधों के रेशों व ऊन से बुनना सीखा। अति प्रारंभिक काल में मनुष्य ने अपने शरीर को ढकने की आवश्यकता महसूस की क्योंकि उसके पास सर्दी–गर्मी एवं पानी से बचाव के लिए पक्षियों की तरह पंख या जानवरों की तरह खाल व बाल नहीं थे। शिकार युग के तुंरत बाद जब वह जानवरों की खाल और चमड़ी प्रयोग करता था, इसे 'पेस्टोरल युग कहते हैं। इस युग में उसे पौधे के रेशों या ऊन द्वारा रस्सियाँ और धागे बनाने का उपाय सूझा। इन रेशों की बटाई करके जोड़ने का उपाय मनुष्य के रचनात्मक दिमाग को सूझा। शुरूआत में उसने अपने अंगूठे व अंगुलियों का प्रयोग किया होगा और उसके बाद उसने एक छोटी पतली लकड़ी के टुकड़े का प्रयोग इस हेतु किया। जल्दी ही उसने इस टुकड़े को एक छोटी मिट्टी की तश्तरी से जोड़ा जिससे उसे एक भारी आधार दिया जा सके। इस तरह तकली का जन्म हुआ जो अभी प्रारंभिक चरण में थी और कताई का हजारों साल पहले का उपकरण थी। मजबूत और एकरूप धागा या रेशा बनाने तथा गति बढ़ाने के लिए मनुष्य के दिमाग को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वह इस उपकरण के आकृति और अभिकल्प में

सुधार करे जिससे अलग–अलग प्रकार के रेशे तैयार हो सके। यह अत्यधिक आश्चर्य की बात है कि वस्त्र उद्योग में अभूतपूर्व तकनीकी विकास होने के बावजूद भारत सहित दुनियाँ के बहुत से भागों में तकली को उसके सुविधाजनक और सरलता के लिए आज भी प्रयोग किया जाता है।

तकली की धीमी उत्पादकता के कारण मानव मस्तिष्क कताई के बेहतर उपकरण की तलाश में था। पहिये के आविष्कार के बाद यह काम शायद और आसान हो गया था और पहिये की शक्ति का कताई के पैडल को घुमाने के लिए उपयोग में लेना अगला तार्किक कदम था। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि चरखे का आविष्कार किसने व कब किया? फिर भी बहुत से लोग यह विश्वास करते हैं। कि यह भारत भूमि पर ईजाद हुआ। अंततः इसने यूरोप की तरफ यात्रा की जहाँ पन्द्रहवी शताब्दी के प्रारंभ तक तकली से ही कताई की जाती थी। इसी तरह भारत को सूत का जन्मदाता माना जाता है। जहाँ पर सूत की खेती का अनुमान आठ हजार साल पहले शुरू हुआ माना जाता है जब मानव सभ्यता ने कृषि युग में प्रवेश किया था। यहाँ से यह अरब और मिश्र पहुँचा। ऐसा माना जाता है कि मध्ययुग में दक्षिण यूरोप के इटली, ग्रीस, स्पेन तक पहुँचा। यह शायद रूचिकर है कि 1350 ई. सन् तक भी जब अंग्रेज पर्यटक जॉन मैनविले भारत से वापस लौटे तो उन्होंने लिखा कि कपास एक आश्चर्यजनक पौधा है जिसकी शाखाओं पर छोटे–छोटे मैमने (कपास की गेंदें) जन्म लेते हैं। यूरोप में लंबे समय तक विस्तृत रूप से यह विश्वास किया जाता था कि सूत कोई पेड़ से उत्पन्न होने वाली ऊन है। बुनाई की कला और तकनीकी के बारे में विश्वास किया जाता है कि सब जगह इसका विकास मानव सभ्यता के शुरूआती दौर में जैविक रेशों एवं ऊन से कपड़ा बुनने के रूप में हआ था, परन्तु सूती धागे को बनने की कला, वह भी आश्चर्यजनक विविधता वाले कपड़े के साथ लगभग 5 हजार साल से भी ज्यादा पहले सिर्फ भारत में ही चरम पर थी और यहीं पर चरम पर रही। इसलिए इसमें कोई चकित होने की बात नहीं कि भारत अठारहवीं शताब्दी की शुरूआत तक दुनियाँ में सबसे बड़ा सूती वस्त्र उत्पादक और व्यापारिक देश रहा।

वैदिक युग :–

हाथ–कताई और हाथ बुनाई भारत में प्रागैतिहासिक काल में ही पूर्णतः विकसित हुई प्रतीत होती है। वेदों में जो कि विश्व की प्राचीनतम पुस्तक मानी जाती है उसमें बुनाई, कताई और रंगाई सहित कपड़ा बनाने का विस्तृत विवरण है। ऋग्वेद के एक मंत्र का अनुवाद यहाँ अपेक्षित है जो एक 'वेद में चस्खा नामक पुस्तक में गांधीजी को मिला, जो उन्हें किसी ने भेंट की थी यह अनुवाद इस प्रकार है– "सूत कातकर और उसे चमकदार रंग देकर गांठों के बिना बुन लो और इस प्रकार उन मांगों की रक्षा करो जो ज्ञानियों ने अंकित किये हैं, और अच्छी तरह विचार करके आने वाली पीढ़ियों को दिव्यज्योति का मार्ग दिखाओ। सममुच यह कवियों का काम है।" इससे स्पष्ट है कि वेदों में कताई एवं बुनाई का अस्तित्व था।

मनुस्मृति, रामायण और महाभारत में भी इस बात के स्पष्ट प्रमाण है कि उस समय सूत के धागों से सजावटी रंगों में कलात्मक और सूक्ष्म बुनाई तरीका प्रचलित था जिसमें कि चमकीले या गोल्डन धागों से सुसज्जित कपड़े बनाये जाते थे। ये सभी इस तथ्य को मजबूती से स्थापित करते है कि भारत में आधुनिक स्तर की बुनाई हजारों साल पहले मौजूद थी।

प्राचीन और मध्यकालीन युग :–

सिंधु सभ्यता के मोहनजोदड़ो नगर में इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिले हैं कि ढाई हजार ई. पूर्व की सिंधु सभ्यता में सूत और ऊन की कताई व बुनाई सामान्य रूप से प्रचलन में थी। मौर्यकाल में और ईसाई युग के तुंरत पहले तक भारतीय हस्तशिल्पियों द्वारा तैयार सूती और रेशमी कपड़े ने अपनी सीमाएँ पार कर ली थी और पश्चिमी युग में प्रसिद्धि पा ली थी।

रोम साम्राज्य में मसलिन की बहुत अधिक मांग थी जिसको औरतें अपने शरीर पर सजाकर वहाँ की सड़कों पर घूमती थी। इससे नैतिक मूल्यों के खतरे की संभावना को देखते हुए वहाँ के राजा को इसके भारत से आयात पर प्रतिबंध लगाना पड़ा। पूरे भारतवर्ष में सैकड़ों ऐसे वस्त्र उत्पादन केन्द्र थे जो अपनी–अपनी विशेषताओं के लिए जाने जाते थे। कालीकट की छपाई वाली

चिंटजेज और केलीकोज, बनारस की मसलिन व डोरिया साड़ियां, कोटा की चन्देरी साड़ियां, जयपुर की बंधेज और आंध्रप्रदेश की कलमकारियां कुछ एक उदाहरण हैं उन उच्च स्तरीय वस्त्रों के जिनके बदले में भारत को टनों सफेद और पीली बहुमूल्य धातुएँ मिली। तथा ये वस्त्र इतने कीमती थे कि बहुत बार तो इन्हें बहुमूल्य रत्नों की तरह कैरट में बेचा जाता था और यह सब हाथकते व हाथबुने सूत्री वस्त्र के द्वारा प्राप्त किया गया था। (अर्थात् 'खादी, जिसका औपचारिक प्रयोग महात्मा गांधी द्वारा उनके भारतीय चित्र में पदार्पण के बाद किया गया।) इसके बाद बहुत सारे विदेशी यात्रियों ने अपने लेखों में भारतीय वस्त्र की गुणवत्ता का बखान किया है। भारतीय वस्त्र की चमक ने मुगल काल में अपने चरम बिन्दु को छू लिया। इस काल में सम्राट औरंगजेब की एक कहानी प्रसिद्ध है जिसमें उसने अपनी पुत्री को इस कारण अशालीनता के आरोप में दण्डित किया था कि उसने दक्कन की मसलिन का सतलड़ा पहन रखा था और फिर भी वह पारदर्शी था।

औद्योगिक क्रांति के प्रभाव :–

भारतीय मसलिन उस समय तक इंग्लैण्ड में भी बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थी परिणामस्वरूप अंग्रेज व्यापारियों के विरोध के कारण इंग्लैण्ड में भारत से इसका आयात सन् 1700 में प्रतिबंधित कर दिया गया। 1720 में इसी उद्देश्य हेतु एक कानून और बनाया गया परंतु वहाँ की आम जनता के विरोध के कारण 1736 में कानून में संशोधन कर भारतीय कपड़े के आयात की अनुमति दी गई। भाप ईंजन के आविष्कार एवं कताई और बुनाई की बिजली से चलने वाली मशीनों के आविष्कार ने सूती वस्त्र उद्योग में क्रांति ला दी। इन सब घटनाओं एवं ब्रिटिश सत्ता के उत्कर्ष के सम्मिलित प्रभाव ने भारत में सूती हाथ कताई व बुनाई के संपूर्ण परिदृश्य को ही बदल डाला। सन् 1771 में इंग्लैण्ड में प्रथम वस्त्र मील स्थापित हुई और उसके बाद दर्जनों स्थापनों के लिए सूत भारत से आयात किया जाने लगा। अब भारत जैसे सूती वस्त्र के सबसे बड़े उत्पादक और निर्यातक देश का इंग्लैण्ड की सूतीवस्त्र मीलों के लिए कच्चे माल के रूप में सूत का उत्पादक और वितरक हो जाना एक लंबी और दुःखद कहानी है। ब्रिटिश वस्त्र उद्योग की सफलता में ब्रिटिशर्स का भारत के शासकों के रूप में उभरने का प्रमुख योगदान रहा जबकि शक्तिशाली तकनीकी ताकतों का गौण।

एच.एच. विल्सन ने मत व्यक्त किया था कि यूरोप के भापशक्ति से चलने वाले करघे, भारत के हस्तशिल्पियों की अंगुलियों का मुकाबला नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंनं राजनीतिक अभियान का सहारा लिया। उन्होंने यह महसूस किया कि इंग्लैण्ड का भारत के प्रति यह गलत कार्य किया गया। इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ कॉमन्स के सामने 1813 में ईस्ट इण्डिया कंपनी के लिए इस बात के प्रमाण रखे गये थे कि भारत में निर्मित सूत और रेशम का माल, इंग्लैण्ड में निर्मित सामान से, ब्रिटिश बाजार में 50 से 60 प्रतिशत कम कीमतों में बेचने पर भी लाभप्रद था। इसके परिणामस्वरूप जरूरी हो गया कि भारत के सामान पर 70–80 प्रतिशत कर लगाकर इंग्लैण्ड के समान को संरक्षण दिया जाये। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो पैस्ले और मैनचेस्टर की मीलें कब की बन्द हो गई होती और भाप ईंजन के द्वारा भी फिर कभी चालू नहीं की जा सकती थी। यदि भारत आजाद होता तो उसने अपने इस उत्पादक व्यवसाय को बचा लिया होता परन्तु अपने संरक्षण के लिए इस कार्यवाही की उसे अनुमति नहीं थी, यह अनुमति एक शक्तिशाली सत्ता की दया पर निर्भर थी। उस पर ब्रिटिश सामान बिना किसी कर के थोपे गए और विदेशी निर्माताओं ने राजनैतिक अन्याय को अपने उस प्रतिद्वन्द्वी को दबाये रखने और अन्ततः खत्म करने के लिए नौकर रख लिया था जिसके साथ वह समान शर्तों पर कभी प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते थे। ईस्ट इण्डिया कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति के बाद भारत ब्रिटिश व्यापारियों की एक संपूर्ण जनजाति के लिए खुला था जो भारत की अर्थव्यवस्था पर भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़े। सूती वस्त्र बुनकरों की हड्डियां भारत के मैदानों में बिखर गई और इस दुःखान्तिका के परिणामस्वरूप भारत में फैली करोड़ों सूत कतीनें बेरोजगार हो गई जिससे उनकी आजीविका का एकमात्र जरिया छिन गया और वे भूख से मरने के लिए हाथ–कताई और हाथ बुनाई का आंदोलन था, जिसमें उन्हें गाँवों के, जिनसे हमारा देश बना है आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के पुनरूद्धार के दर्शन होते थे।

गांधी जी ने अपना खादी आंदोलन 1918 में शुरू किया। प्रारंभ में खादी पर उनका जोर इस विचार से था कि इससे गरीबी से पीड़ित जनसाधारण को राहत मिलती है, परन्तु 1935 से उनके इस विचार में परिवर्तन आया। उस समय से वे यह आग्रह करने लगे कि खादी केवल दूसरो को बेचने के लिए ही न हो बल्कि गाँव वाले उसे खुद अपने इस्तेमाल के लिए बनाएँ। 1942–43 के कारावास में उन्हें अपने खादी आंदोलन पर और चिंतन करने का समय मिला और जब वे बाहर निकले तो खादी आंदोलन को एक नई दिशा देने का निश्चय करके निकले। यह उनका एक दार्शनिक चिंतन था जिसे खादी की दार्शनिक अवधारणा में देखेंगे।

खादी अर्थ एवं परिभाषा :–

यद्यपि खादी शब्द 1920 से प्रचलन में है परन्तु इसे विधिक परिभाषा 1956 में बने खादी एवं ग्रामोद्योग विधेयक में दी गई जिसमें खादी का अर्थ है "ऐसा कपड़ा जो भारत में हथकरघे पर सूत, रेशम या ऊन के हाथकते या इनमें से किसी दो या सभी मिश्रित धागे से बना हो। सामान्यतः यह परिभाषा खादी को बनाने की प्रक्रिया के साथ–साथ इसके तीन प्रकार के कच्चे माल को भी शामिल करती है।

महात्मा गांधी की खादी की परिभाषा इससे कहीं अधिक विस्तृत एवं नैतिक अर्थ लिए हैं जिसे उन्होंने स्वयं जीवन भर अंगीकार किए रखा। उन्होंने कहा "खादी का मतलब है सभी लोगों की आर्थिक स्वतंत्रता और समानता का प्रारंभ।" बापू का यह वाक्य आज भी कितने महत्त्व का और जरूरी है, यह हम समझ सकते हैं। मनुष्य की प्राथमिक जरूरतों में कपड़े का प्रमुख स्थान है। जो देश प्राथमिक जरूरतों में परावलम्बी रहे वह ऊपर नहीं उठ सकता। इसलिए वस्त्र स्वावलंबन भी ग्रामस्वराज्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है। हमारा देश वस्त्र के मामले में स्वावलंबी था। इतना महीन सूत इस देश में काता जाता था एवं इतने महीन थान बनते थे कि कहते हैं दियासलाई में सारा थान आ जाए। अंग्रेजों द्वारा हस्तउद्योग का विनाश इस परतंत्रता का कारण बना। किंतु अभी भी वह स्वतंत्रता पुनः हासिल हो सकती है यदि श्रम यज्ञ को अपनाया जाए। हमारे देश में धन की कमी नहीं है जितनी काम की। लाखों ग्रामीण जनसंख्या जो बेरोजगार बैठी है. किसान भी जो चार महीने बिल्कुल खाली बैठे रहते है, अपने शारीरिक श्रम एवं समय का उपयोग कर स्वावलम्बी बन सकते हैं।

गांधी की खादी की परिभाषा में आर्थिक स्वतंत्रता के साथ समानता का भाव भी समाहित है। समानता के माने हैं हमें स्वदेशी वृति बढ़ानी चाहिए। जीवन की जरूरतों की पैदाइश और बंटवारे का विकेन्द्रीकरण करना चाहिए। 'चरखा' सादगी, मानवजात की सेवा, दूसरों को हानि न पहुँचाने वाला अहिंसक जीवन, गरीब और धनी, मालिक और मजदूर, राजा और किसान के बीच अटूट संबंध रखने का संदेश देता है।

गांधी जी खादी के माध्यम से 'अहिंसक क्रांति' करना चाहते थे। यहाँ 'क्रांति' शब्द किसी जन विद्रोह का समानार्थी नहीं है। यहाँ क्रांति का सार मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन में है। जिसे अहिंसा का पालन करना है, सत्य की भक्ति करनी है, ब्रह्मचर्य को कुदरती बनाना है एवं स्वदेशी का पालन करना है, उसके लिए तो शरीर–श्रम रामबाण सा हो जाता है। यह श्रम वास्तव में तो खेती में होता है लेकिन सब लोग खेती नहीं कर सकते, ऐसी आज तो हालत है ही। इसलिए खेती के आदर्श को ध्यान में रखकर आदमी कोई दूसरा श्रम करे जैसे कताई, बुनाई, बढ़ईगिरी, या अन्य कोई भी हस्तशिल्प ।

19वीं सदी में औद्योगिक क्रांति देश में आई और शहरों में कलकारखाने स्थापित होने लगे। कपड़े की मीलें स्थापित हुई। पहले यह कपड़ा इंग्लैण्ड के मैन्चेस्टर और लंकाशायर जैसे शहरों की मीलों में बनता था। कपास यहाँ से जाती थी और कपड़ा वहाँ से बनकर आता था। गांधी ने इस उल्टी गंगा को सीधी करने का प्रयास किया और खादी जैसे वस्त्र का जन्म हुआ।

खादी का अर्थ है हाथ से कता हुआ तथा हाथ से बुना हुआ कपड़ा। बापू के एकादश व्रतों में एक व्रत है स्वदेशी। वे लिखते हैं खादी का मतलब है हममें से हर एक को संपूर्ण स्वदेशी की भावना बढ़ानी और टिकानी चाहिए। स्वदेशी का मतलब है नजदीक से नजदीक बनी चीज का उपयोग करना। खादीवृति का अर्थ है संपूर्ण मानवता के साथ अपनापन।

इस प्रकार खादी में निहित है आर्थिक एवं सामाजिक स्वावलंबन, उत्पादन एवं वितरण का विकेन्द्रीकरण, कायिक श्रम, स्वदेशी एवं समानता की भावना, अहिंसा, सत्य का अन्वेषण एवं इन सबके परिणामस्वरूप नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति।

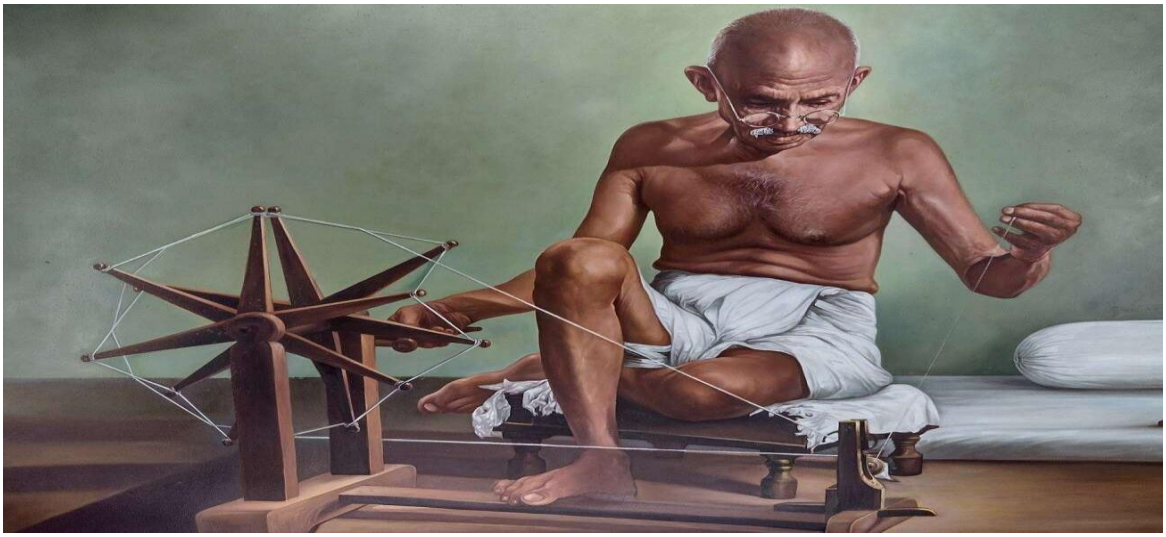

1 खादी की दार्शनिक पृष्ठभूमि :

गांधीजी के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक सारे क्रियाकलाप उनके गहरे धार्मिक विश्वास और जीवन दर्शन से सीधे व्युत्पन्न थे तथा समाज और व्यक्ति दोनों से संबंध रखते थे। गांधी जी की खादी की अवधारणा को समझने के लिए इन सब आधारभूत विचारों को जानना आवश्यक है। गांधी जी ने मानव मात्र को ईश्वर की सर्वोत्तम रचना माना था जो उनके अनुसार निश्चित भौतिक उद्देश्यों के साथ शरीर के रूप में है और आध्यात्मिक उत्थान के लिए आत्मा के रूप में है।

1925 में उन्होंने लिखा कि "मैं हाथकताई को एक व्यवसाय के रूप में नहीं देखता हूँ अपितु सभी धर्मों एवं विचारधाराओं के लिए एक कर्त्तव्य मानता हूँ।" एक अमेरिकी लेखक ने कहा कि भविष्य उन देशों के साथ है जो मानव–श्रम में विश्वास करते हैं। जीवनहीन अनंत मशीनों की पूजा से विश्व के देश थक चुके हैं। हम अद्वितीय जीवित मशीनों को बर्बाद कर रहे हैं अर्थात् अपने स्वयं के शरीरों को फालतू छोड़कर उनके स्थान पर जीवनहीन मशीनों का प्रयोग करके या इन मशीनों पर विश्वास करते हुए उन्हें विकल्प बनाने का प्रयास करते हैं।

यह ईश्वर का नियम है कि शरीर से पूर्ण कार्य और उपयोग लिया जाए। हम इसको अनदेखा नहीं कर सकते। चरखा, शरीर यज्ञ शरीर श्रम का उत्तम साधन हैं। जो अपना त्याग किये बगैर भोजन करता है वह चोरी करता है और यह 'ब्रेडलेबर' (रोटीश्रम) के सिद्धान्त के साथ मेल खाता है. जो न केवल हमारे धर्मग्रन्थों में बताया गया है बल्कि पाश्चात्य विचारकों ने भी बताया है। गांधीजी आगे समझाते हैं कि उस व्यक्ति को खाने का क्या अधिकार है जो कोई शरीर श्रम नहीं करता। अतः प्रत्येक को चाहे वह अमीर हो या गरीब, यदि किसी न किसी रूप में वर्जिश करनी पड़ती है तो क्यों न यह किसी उत्पादक कार्य के रूप में अर्थात् 'रोटीश्रम' (ब्रेडलेबर) के रूप में हो। रोटीश्रम उस व्यक्ति के लिए उपासना का उत्तम तरीका है, जो अहिंसा और सत्य की पूजा करना चाहता है और ब्रह्मचर्य को एक प्राकृतिक क्रिया के रूप में जानना चाहता है। वे आगे इस तथ्य पर जोर देते हैं और स्पष्ट

करते हैं कि प्रथम दृष्टया यह एक दुःख की बात है कि करोड़ों लोगों ने हाथों को हाथों की तरह प्रयोग करना छोड़ दिया है। प्रकृति अपने इस उपहार के जघन्य विनाश के लिए, जो उसने हमें मानव मात्र के रूप में प्रदान किया है, खतरनाक प्रभावों से दण्डित कर रही है। यह हाथों की अद्वितीय कार्यप्रणाली ही, है जो हमें दूसरी कुछ चीजों की तरह अन्य प्रजातियों से अलग करती है। हममें से करोड़ों उन्हें केवल पैरों की तरह इस्तेमाल करते हैं और परिणाम यह होता है कि वह शरीर और बुद्धि दोनों को भुगतना पड़ता है।

अकेला चरखा इस मूर्खतापूर्ण अपव्यय को रोक सकता है और यह तभी पुनर्जीवित किया जा सकता है यदि प्रत्येक घर पुनः कताई मिल के रूप में परिवर्तित हो जाए और प्रत्येक गाँव एक बुनाई मिल के रूप में। निश्चित ही गांधी जी प्रत्येक और सभी को इस यज्ञ में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं जो कि बदले में बिना कुछ चाहे एक–दूसरे की भलाई करने और समाज में श्रम की प्रतिष्ठा कताई के द्वारा पुनः पुनस्थापित करने के लिए निर्देशित एक कार्य है।

खादी अंतत गरीब और अमीर, ऊँच और नीच के बीच का अंतर मिटाकर उन्हें समाज के धन में बराबर का भागीदार बनाने के लिए और 'सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त को स्वेच्छा से अपनाने के लिए लक्षित है। इसका अर्थ है अनावश्यक इच्छाओं की बढ़ोतरी और साथी मानवमात्र की कीमत पर विलसितापूर्ण जीवन का निषेध। यह प्रत्येक का गरीब से परिचय करवाती है और उसके नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान के लिए केन्द्रित करती है।

गांधी जी एक गहरे धार्मिक व्यक्ति थे जिनका वैश्विक आधारभूत नैतिक शिक्षाओं में जो सब धर्मों में समान थी, दृढ़ विश्वास था। वे अंहिसा के दृढ़ भक्त थे जिसके प्रयोग से उन्होंने सत्य जो भगवान है, को पहचानना चाहा। उनके लिए स्वदेशी के राजनैतिक पहलू की बनिस्पत आर्थिक और धार्मिक पहलू ज्यादा आकर्षक थे। उनके लिए धार्मिक पहलू अपने आप में पर्याप्त ही था। वह प्राथमिक धर्म जो संपूर्ण मानवता के लिए एक ही था. हमें अपने पड़ौसी के प्रति उदार और सजग होना था। किसी के द्वारा अपने देश और मानवता की व्यक्तिगत सेवा अपने पड़ौसी की सेवा करने में ही है। अगर यह सत्य है तो यह हमारा धार्मिक कर्तव्य है कि हम अपने किसानों और दस्तकारों जैसे बुनकर, सुधार आदि को बढ़ावा दें। आगे, स्वदेशी का नियम व्यक्ति की आधारभूत या मूल प्रकृति में है परन्तु यह अनदेखी में डूब गया है। अपने मूल रूप में यह एक कर्तव्य के रूप में अपने पड़ौसी की सेवा में कटिबद्ध होने से ही है। स्वदेशी, स्वधर्म है जो प्रत्येक का अपेन सबसे नजदीकी वातावरण के प्रति है। इसलिए गांधी के अनुसार प्रत्येक का अपनी आस्था से अलग यह कर्तव्य है कि वह अपने पड़ौसी कतिन और बुनकर को उनके उत्पाद का प्रयोग करके बढ़ावा दें और सहयोग करें जो कि मानवता का उच्चतम धर्म है।

खादी आंदोलन की शुरूआत से ही गांधी जी पूर्णतः सहमत थे कि चरखा अहिंसा का साधन है और जिस अकेले के माध्यम से ही स्वराज्य हासिल किया जा सकता है। कांग्रेस ने भी इस बात को स्वीकार किया था फिर भी शुरूआती दौर में उनका जोर करोड़ों गरीब बेरोजगार कृषकों को उनके खाली समय में एक पूरक उपयोगी धंधा उपलब्ध कराने पर ही था। वे चरखे की मूलभूत आवश्यकता पर जहाँ कहीं भी जरूरत पड़ती थी, जोर देते थे परन्तु ज्यादा जोर 1936 के बाद दिया जब उन्हें चरखा संघ से न्यूनतम निर्वाह मजदूरी का प्रस्ताव प्राप्त हुआ और खादी उत्पादन को गाँव वालों के अपने उपयोग के लिए शुरू किया गया। 1942 के आंदोलन में जब उन्हें जेल हुई तो इस मुद्दे पर उन्हें और गहराई से विचार करने का समय मिला और वे दृढ़ निश्चय के साथ बाहर आए कि खादी को एक नया मोड़ दिया जायेगा जिसमें खादी के अहिंसा के साथ संबंध को दृढ़ता के साथ पहचानना था।

2 खादी का नया दृष्टिकोण :–

1 सितंबर, 1944 को सेवाग्राम में चरखा संघ के संरक्षकों की बैठक में गांधीजी ने खादी कार्य के लिए एक नई योजना प्रस्तुत की। गांधी जी ने कहा कि सबसे महत्त्वपूर्ण खोज जो मैनें अब तक की, वह यह है कि चरखा संघ की बुनियाद ही कमजोर थी अतः संघ आसानी से खत्म हो सकता था। इसने लोगों के जीवन में जड़ें नहीं जमाई थी। इसका अस्तित्व इसके नेताओं पर निर्भर था जिन्हें मिटाकर सरकार आसानी से इस आंदोलन को खत्म कर सकती थी। अतः मेरा यह दावा कि चरखे के पुनरूद्धार का आंदोलन जिसका किन्हीं भी परिस्थितियों में विनाश नहीं किया जा सकता था, धूल में मिल गया। हम कहते हैं, कि हम अहिंसा के पुजारी है अगर ऐसा है तो हमें अपने जीवन में अहिंसा की शक्ति दिखानी होगी। चरखा संघ का प्रत्येक सदस्य अहिंसा का साक्षात गवाह होना चाहिए। आइए हम स्वीकार करें कि हम अहिंसा को अपने अस्तित्व का हिस्सा बनाने में असफल हुए हैं। अन्यथा हम चरखे को हर गाँव में स्थापित कर पाते। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं असफल हो गया हूँ। हम सभी को सहमत होना चाहिए कि चरखा अहिंसात्मक आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। ये गाँव काम की तलाश में और कहीं नहीं जाएंगे। प्रत्येक गाँव आजाद भारत का केन्द्र बिन्दु बनेगा। हिन्दू–मुस्लिम विवाद की समस्याएँ, छूआछूत, मनमुटाव और गलत पद्धतियाँ तथा बदले की भावना सब मिट जाएंगे। यही संघ का असली कार्य होगा। हमें इसी के लिए जीना और मरना पड़ेगा।

चरखे के लिए गाँव केन्द्र है और चरखा संघ तभी अपनी कामयाबी मान सकता है जब उसका कार्य गाँव में विकेन्द्रित हो जाए। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में बंधुंआ मजदूरी का जिक्र किया है। सदियों तक चरखा हिंसा और बल प्रयोग तथा जोर जबरदस्ती का प्रतीक रहा है। कतिन को मुट्ठी भर दाने या दो सिक्के मिलते थे परन्तु महलों में चलने वाली बेहतरीन मसलिन में लिपटी हुई औरतें मजदूरों के शोषण के उत्पादन का उपभोग करती थी। इन सबके विरूद्ध मैनें तुम्हें चरखे को अहिंसा के प्रतीक के रूप में दिया है। चरखा, जो सदियों से गरीबी, अन्याय और बंधुआ मजदूरी का प्रतीक रहा है इसे नई अहिंसा शक्ति, नई समाज व्यवस्था और नई अर्थव्यवस्था का प्रतीक बनाने का भार हमारे कंधों पर आ पड़ा है। हमें इतिहास बदलना है और मैं यह आपके द्वारा करना चाहता हूँ। अतः यदि हमें अहिंसा को आदर्श के रूप में अपनाना है ।

तो चरखे को उसके वास्तविक रूप में जानना होगा और इसका प्रतीक बनाकर हमेशा आँखों के सामने रखना होगा। जब भी मैं अहिंसा का विचार करता हूँ तो चरखे का चित्र मेरे सामने आ जाता है। अहिंसा को हम अलग से देख नहीं पाते

परंतु यदि यह पाया जाता है कि मैं भ्रम से पीडित था और यह कि चरखे में मेरा विश्वास महज मूर्तिपूजा थी तो या तो तुम मुझे चरखे की लकड़ी से जला देना या मैं खुद चरखे को अपने हाथों से जला दूंगा।

लंबे विचार विमर्श के बाद चस्खासंघ ने खादी कार्य को व्यक्तिगत और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के स्तर पर पुनस्थापित किया। आत्मनिर्भरता के प्रथम कदम के रूप में चरखा संघ ने यह अनिवार्य कर दिया कि खादी के खरीददार खादी की कुछ कीमत स्वयं द्वारा काते हुए सूत के रूप में चुकाए। यह नियम चल नहीं पाया और इसके नाम पर केवल तकनीकी खानापूर्ति कर दी जाती थी। यह सिर्फ एक अच्छी भावना के बदसूरत नतीजे का उदाहरण साबित हुआ। जाहिर है गांधी जी को इस अनपेक्षित मोड़ से गहरा दुःख हुआ। भारत की आजादी के तुरंत बाद 30 जनवरी 1948 को गांधी जी चल बसे और खादी की दुनियाँ अपने भविष्य का फैसला खुद करने के लिए छोड़ दी गई। खादी की नई योजना को कार्यान्वित करने में आई असंख्य व्यावहारिक समस्याओं के परिणामस्वरूप चरखा संघ खादी बनाने और बेचने की पुरानी व्यवस्था पर लौट आया और तब से आगे की व्यावसायिक खादी की यात्रा पुनः जारी रही। अतः खादी इतिहास के छोटे परन्तु महत्त्वपूर्ण इतिहास का अंत हो गया।

3 खादी अस्तित्व के कारण :–

यह अत्यंत आश्चर्य की बात है कि विद्युत से चलित मशीनीकृत और संगठित वस्त्रमीलों की बाढ़ एवं कहने की जरूरत नहीं कि ब्रिटिश शासकों के दबाव और नकारात्मकता के बावजूद सूती कपड़े की हाथ–कताई और हाथ–बुनाई जिन्दा रही तथा भारतीय जीवन के हर पहलू में अल्प ही सही परंतु एक महत्त्वपूर्ण योग अदा करती रही। जाहिर है प्रत्येक के मन में इसके कारणों को जानने की तीव्र भावना जाग्रत होगी।

वास्तव में हाथ–कताई और हाथ–बुनाई का सूती कपड़ा एक मूलभूत आवश्यकता थी और इस प्रक्रिया में संपूर्ण भारत में कतीनों और बुनकरों की आजीविका का एकमात्र साधन थी। अतः उनके पास बहुत कम मजदूरी होते हुए भी इस काम को करने के अलावा कोई और चारा नहीं था। वर्षों से बनी हुई लोगों की आदतों, रूचियों और परम्पराओं ने भी उनके द्वारा उत्पादित सामान की मांग को जिन्दा रखा जैसे कि बंगाली या चन्देरी साड़ियां, बहुत बारीक बुनी हुई मसलिन, दोसूत्ती चदरें, खेस, सादे तौलिये, दरियां इत्यादि के लिए थोड़ा अधिक देना पड़े तो भी इनकी बहुत सारी उपयोगिताओं के कारण गौर नहीं करते थे। इसके अलावा भारी मशीनीकरण के कारण भारतीय उपभोक्ताओं के पंसदीदा कपड़े के कुछ प्रकार नहीं बन पाते थे या उनको बनाना अलाभप्रद प्रतीत होता था। अतः हाथ–कते और हाथ–बुने सूती कपड़े के कुछ प्रकार बराबर मांग में बने रहे यद्यपि अल्प मात्रा में ही।

हाथकताई की कला पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित होती गई और उत्तरी भारत में यह समाज के गरीब और अमीर, ऊंचे और नीचे सभी वर्गों की महिलाओं की पसंदीदा दिनचर्या बनी रही। वे बहुत बार किसी व्यक्तिगत या सार्वजनिक जगह पर अपने–अपने चरखों के साथ बैठ जाती थी और यह एक प्रकार का अनौपचारिक सामाजिक क्लब बन जाता था जिसमें प्रत्येक मौहल्ले की महिलाएँ दोपहर के समय चरखा कातती और चरखे की मधुर आवाज के साथ गुनगुनाती रहती थी। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान के कुछ भाग और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गाँवों में मध्य बीसवीं शताब्दी तक यह एक सामान्य नजारा था। और आगे कहें तो इन भागों के ग्रामीण लोक में चरखा अपनी बेटियों को दिए जाने वाले दहेज में एक समान वस्तु थी जो पारिवारिक जीवन में इसके महत्त्व को उजागर करती है। गांधीजी ने लिखा है कि पंजाब ने मेरे सामने एक बहुत ही साफ सुथरा समाधान प्रस्तुत किया है। ईश्वर का लाख लाख धन्यवाद है कि पंजाब की सुंदर महिलाएँ अभी तक अपनी अंगुलियों की कलाकारी को नहीं भूली। कम या ज्यादा वे अभी भी कताई की कला को जानती है। उन्होंने अभी तक अपने चरखों को जलाया नहीं है जैसा कि गुजरात की महिलाएँ कर चुकी है। मेरे लिए यह बहुत की सुखद अनुभूति है कि वे धागे की गेंन्दें मेरी झोली में फेंकती हैं। वे स्वीकार करती हैं कि उनके पास कताई के लिए समय है। वे स्वीकार करती है कि उनके हाथ–कते सूत का खद्दर मशीन कते सूत से बढ़िया है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हाथ–कताई ने हमारे सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के रूप में भी अच्छी जगह बनाई है। हिन्दुओं में एक बहुत ही महीन हाथकता धागा जो लाल या पीले रंग का होता है एवं जिसे 'कलावा' कहा जाता है दाहिने हाथ की कलाई पर अभी भी शुभ अवसरों पर बांधा जाता हैं विशेषकर उत्तरी भारत में। इसी प्रकार पारंपरिक ब्राह्मण परिवारों में आज भी यज्ञोपवीत के लिए सूत कातने की परम्परा का पालन किया जाता है और इसके लिए उत्तर व दक्षिण भारत में तकली का प्रयोग किया जाता है।

इन सब परम्पराओं की उपस्थिति ने हाथ कताई की कला को जारी रखा और भारत के विभिन्न भागों में सूत की हाथ कताई का पुनरूद्धार एक असंभव कार्य नहीं था। यद्यपि हाथ करघा बुनकर मशीन के धागे की मजबूती के कारण हाथ–कते सूत को बुनने में आनाकानी करने लगे परंतु काम की कमी को देखते हुए एक लगातार और ठीक–ठाक आय के लिए उन्हें खादी बुनने के लिए राजी होना पड़ा। यह बताना उपयुक्त होगा कि कुछ भागों में जैसे बुन्देलखण्ड में हाथ कताई और हाथ–बुनाई एक पूर्ण पारिवारिक व्यवसाय था।

विदेशी कपड़े का बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन निःसंदेह खादी उद्योग के पुनरूद्धार के लिए वरदान साबित हुआ। इस वैश्विक आर्थिक और नैतिक क्रियाकलाप के लिए देशभक्ति की भावना के जुड़ने और राष्ट्रीय ताकतों के सहयोग ने खादी आंदोलन को और त्वरित किया परिणामस्वरूप यह मरता हुआ उद्योग एक बार फिर नई चेतना के साथ जीवित हो उठा। खादी के भावनात्मके आकर्षण ने इसकी थोडी बहुत गुणात्मक कमियों को ढकने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और यह सम्माननीयता के रूप में लोगों के उच्च व जागरुक वर्ग में अग्रणीय स्थान पर रही।

इन सब परिस्थितियों के मद्देनजर इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि खादी उद्योग अस्तित्ववान रहे और अनेक बाधाओं के बावजूद खादी लोगों के जीवन का हिस्सा बनी रहे।

खादी और ग्रामोद्योग आयोगः –

संसद 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग अधिनियम 1956' के तहत भारत सरकार द्वारा बनाई गई वैधानिक संस्था है। यह भारत में खादी और ग्रामोद्योग से संबंधित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (भारत सरकार) के भीतर एक सर्वोच्च निकाय है, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में खादी और ग्रामोद्योग की स्थापना और विकास के लिए प्रचार, योजना है । , सुविधाओं और सहायता प्रदान करने के लिए, जिसमें वह आवश्यकतानुसार ग्रामीण विकास के क्षेत्र में काम करने वाली अन्य एजेंसियों की मदद भी लेता है। इसका मुख्यालय मुंबई में है, जबकि अन्य प्रभागीय कार्यालय दिल्ली, भोपाल, बैंगलोर, कोलकाता, मुंबई और गुवाहाटी में स्थित हैं।

खादी को पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा और उत्तर पूर्वी राज्यों से रेशम सहित कच्चे माल के आधार पर भारत के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त किया जाता है, जबकि कपास आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से प्राप्त होता है। ऐसा होता है। पाली खादी की खेती गुजरात और राजस्थान में की जाती है जबकि हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर में ऊनी खादी के लिए जाना जाता है।

निष्कर्षः –

महात्मा गांधी ने भारत में ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी की कताई को बढ़ावा देना शुरू किया, इस प्रकार यह खादी स्वदेशी आंदोलन का एक अभिन्न अंग और प्रतीक बन गया। महात्मा गांधी ने खादी आंदोलन की शुरुआत की थी । इसका मकसद, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना और भारत में स्वदेशी कपड़ों का इस्तेमाल बढ़ाना था । खादी, भारत का राष्ट्रीय कपड़ा बन गया और आज़ादी की लड़ाई में इसका अहम भूमिका रही। गांधी जी ने खादी को आत्मनिर्भरता और ग्रामीण स्वरोज़गार का साधन माना । उन्होंने खादी को भारत के लोगों की जड़ों से जोड़ने का ज़रिया माना । गांधी जी ने चरखा चलाने की तुलना अहिंसा से की । उन्होंने लाखों लोगों को खादी बुनने के लिए प्रोत्साहित किया । खादी को बनाने में कम पानी लगता है । खादी टिकाऊ होती है । खादी आंदोलन सामाजिक और आर्थिक कारणों से चलाया गया था । खादी आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन का अहम हिस्सा था । खादी आंदोलन, भारत के आज़ादी के संघर्ष का एक अहम प्रतीक था । खादी आंदोलन, औपनिवेशिक शासन के ख़लिाफ़ विरोध का एक तरीका था । महात्मा गांधी ने 1920 के दशक में भारत में ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता (ब्रिटेन में औद्योगिक रूप से निर्मित कपड़े का उपयोग करने के बजाय) के लिए खादी के कताई को बढ़ावा देना शुरू किया, इस प्रकार खादी स्वदेशी आंदोलन का एक अभिन्न अंग और प्रतीक बन गया। उन्होंने अपने असाधारण कार्यों एवं अहिंसावादी विचारों से पूरे विश्व की सोच बदल दी। आज़ादी एवं शांति की स्थापना ही उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य था। गांधी जी द्वारा स्वतंत्रता और शांति के लिए शुरू की गई इस लड़ाई ने भारत और दक्षिण अफ्रीका में कई ऐतिहासिक आंदोलनों को एक नई दिशा प्रदान की। इस प्रकार, खादी आंदोलन सामाजिक और आर्थिक कारणों से स्थापित किया गया था। इस आंदोलन का सार गांधीजी की इस समझ में निहित है कि कपड़े से आम जनता का उत्थान हो सकता है। इसलिए, खादी भारत का राष्ट्रीय कपड़ा बन गया और भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक केंद्रीय प्रतीक बन गया।

संदर्भ सूची :–

1ण ग्राम स्वराज्य, गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 36
2ण खादी, क्यों और कैसे, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, गांधी जी
3ण यंग इण्डिया, महात्मा गांधी, 02.06.1927
4ण खादी, क्यों और कैसे, गांधी जी. नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 134
5ण हरिजन 16.11.1934
6ण गांधी, मोः मेरे सपनों का भारत, भार्गव भूषण पेंस, वाराणसी
7ण सीता रमैया, वी.पी. : गांधी और गांधीवाद भाग –2, इलाहाबाद 1942
8ण भट्टाचार्य, प्रभातः गांधी दर्शन, नई दिल्ली 1969
9ण कुमार प्रशांत, महात्मा गांधी स्वदेशी की रक्षा, सर्व सेवा संघ, प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।
10ण विनोबा भावे खादी विचार – सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, 1967।
11ण शिव राम पल्ली, खादी विचार, पृष्ठ संख्या –14
12ण मोहनदास करमचंद गांधी – सत्य के प्रयोग, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, 2013, पृष्ठ संख्या –307
13ण विनोबा साहित्य, खंड 15, पृष्ठ संख्या – 170
14ण प्रतियोगिता दरपन लेख (खादी और ग्रामोद्योग भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक) जनवरी 2011, पृष्ठ संख्या – 1068
15ण महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन, वेद प्रकाश वर्मा, इन्दु प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 131
16ण नीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, वर्मा वेद प्रकाश, अलाइड पब्लिशर्स लि. नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 363
17ण नीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, वर्मा वेद प्रकाश, अलाइड पब्लिशर्स लि. नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 366
18ण हिन्दू धर्म, महात्मा गांधी, पृष्ठ 137
19ण महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन, वेद प्रकाश वर्मा, इन्दु प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 261
20ण भगवत गीता, अध्याय 2, श्लोक 59
21ण यंग इण्डिया, महात्मा गांधी, 21.10.1921, पृष्ठ संख्या 329
22ण धर्म नीति, महात्मा गांधी, पृष्ठ संख्या 173